प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष

प्रथम पत्र : व्याकरण

पूर्णांक
रेगुलर – 80
प्राईवेट – 100

पाठ्यपुस्तक –वरदराजकृत लघुसिद्धान्त–कौमुदी (केवल तीन प्रकरण निर्धारित हैं) ।
सहायक पुस्तक – रूपचन्द्रिका या रूपकौमुदी या रूपकारिका ।

निर्धारित प्रकरण तथा अंक विभाजन :–

1	संज्ञा प्रकरण	3 (5)
2	सन्धि प्रकरण	10 (12)
3	षड्लिंडप्रकरण	20 (25)
4	अव्यय प्रकरण	5 (5)
5	तद्धित प्रकरण	16 (20)
6	समास प्रकरण	10 (15)
7	विभक्त्यर्थ प्रकरण	3 (4)
8	स्त्रीप्रत्यय प्रकरण	4 (4)
9	सूत्रों के अर्थ और उनकी उदाहरणों में संगति	8 (10)

1 संज्ञा प्रकरण : चतुर्दश प्रत्याहारणसूत्र , प्रत्याहारसिद्धि वर्णभेद, (वर्णो के उच्चारण स्थान तथा प्रयत्नों का ज्ञान) — 3 (5) अंक

2 सन्धिप्रकरण : क एकसूत्र साध्य प्रयोग (छः प्रयोग) — 5 (6) अंक
ख अधिसूत्रसाध्य प्रयोग (तीन प्रयोग) — 5 (6) अंक

3 षड्लिंडप्रकरण क छोटी प्रकिया वाले रूपों की सिद्धि चार रूप — 6 (7) अंक
ख बडी प्रकिया वाले रूपों की सिद्धि चार रूप — 6 (10) अंक
ग रूप स्मरण दस शब्दों की विभिन्न विभक्तियों (तीस रूप) — 8 (8) अंक

4 अव्यय प्रकरण — 5 (5)

5 तद्धित प्रकरण : क रूप सिद्धि : चार रूप — 8 (12)अंक
ख चार सूत्र व्याख्या — 8 (8)अंक

6 समास प्रकरण : असमस्त पदों में समास पाँच प्रयोग — 10 (15) अंक
7 विभक्त्यर्थ प्रकरण: दो प्रयोग — 3 (4) अंक
8 स्त्रीप्रत्यय प्रकरण: सूत्रों सहित चार रूप — 4 (4) अंक
9 सूत्रों के अर्थ और उनकी उदाहरणों में संगति चार सूत्र — 8 (10) अंक

निर्देश परीक्षक के लिए –

1 परीक्षक के लिए निर्देश है कि वह प्राईवेट विद्यार्थियों के लिए अंकों का उल्लेख कोष्ठों में करें ।

2 विकल्प के लिए प्रत्येक भाग में से दो या तीन प्रयोग/रूप/सूत्र अधिक दिए जायें ।
3 प्रत्येक शब्द/धातु की रूपावली सभी विभक्तियों/पुरूषों में पूछने की बजाए किसी एक विभक्ति /पुरूष में पूछी जाए तथा विकल्प दुगना होना चाहिए ।

विद्यार्थियों के लिए –

रूपसिद्धि की प्रकिया अव्यवस्थित ढंग सेन लिखें । अपितु निम्न विधि का प्रयोग करें । दोनों किनारों से तथा मध्य से उत्तर–पुस्तिका को छोडकर प्रत्येक पृष्ठके चार कालम बनाएं । पहले और चौथे हाशिए के बराबर तथा मध्य के दो कालम बडे आकार के । पहले हाशिए में केवल प्रश्न तथा भागों की सख्या लिखें । दूसरे कॉलम में ऊपर से नीचे तंक केवल सूत्र, तीसरे में केवल उनके कार्य तथा चौथे में केवल तज्जन्य स्थिति लिखते जाएँ । परीक्षा का माध्यम हिन्दी, अथवा संस्कृत होगा परन्तु प्रश्न–पत्र की भाषा संस्कृत होगी ।

द्वितीय पत्र : काव्य नाटक

पूर्णांक
रेगुलर – 80
प्राईवेट – 100

क – रघुवंश प्रथम और द्वितीय सर्ग । 20 (25) अंक
ख – स्वप्नवासवदत्तम् 45 (55) अंक
ग – वृत्त रत्नाकार 15 (20) अंक

नोट –

छन्द विषयक सामान्य ज्ञान के अतिरिक्त केवल निम्न छन्दों के लक्षण उनके अर्थ तथा उदाहरणों में उनका समन्वय अपेक्षित है – अनुष्टुप्,इन्द्रवज्रा,उपेन्द्रवज्रा,उपजाति,वंशस्थ,द्रुतविलम्बित, भुजंगप्रयात, प्रहर्षिणी, वसन्त–तिलका, मालिनी, मन्दाकान्ता, शिखरिणी, हरिणी, शार्दूलविक्रिडित,स्रग्धरा,विद्युन्माला, पंचचामर, त्रोटकर,आर्या, गीति, मालती, तामरस ।

अंक विभाजन

क – रघुवंश :
1 श्लोकों का सप्रसंग हिन्दी अनुवाद 10 (15) अंक
2 आलोचनात्मक प्रश्न । यथासार वर्णन विशेष,चरित्र चित्रणकाव्यसौन्दर्य आदि 10 (10) अंक

ख– स्वप्नवासव दत्तम् :
तीन पद्यों का सप्रसंग हिन्दी अनुवाद 18 (25) अंक
दो आलोचनात्मक प्रश्न 20 (20) अंक
दो सूक्तियों की व्याख्या 7 (10) अंक

ग– वृत्तरत्नाकर
1 छन्दविषयक सामान्य ज्ञान।
यथा–छन्द,लघु , गुरू ,मात्रा, यति, युति,गण, वृत्त समवृत्त , अर्धसमवृत्त, विषमवृत्त,जाति किसी स्थिति में लघु गुरू माना जाता है – आदि का ज्ञान 3(4) अंक
2 निर्धारित छन्दों में से किन्हीं चार छन्दों के लक्षण , अर्थ उदाहरण और समन्वय 12(16) अंक

परीक्षक के लिए निर्देश :–
1 परीक्षक के लिए निर्देश है कि वह प्राईवेट विद्यार्थियों के लिए अंकों का उल्लेख कोष्ठों में करें ।
2 सभी प्रश्नों में दो विकल्प दिए जायें ।

तृतीय पत्र – रचना अनुवाद तथा गद्य–पद्य

पूर्णांक
रेगुलर – 80
प्राईवेट – 100

क	संस्कृत –वाक्यरचना एवं अनुवाद	48 (55) अंक
ख	हितोपदेश – मित्रलाभ (पांचवी तथा छठी कथा वर्जित तथा सुहृदभेद)	20 (30) अंक
ग	अमरकोष (द्वितीय काण्ड) सिंहादिवर्ग,ब्रह्मवर्ग पर्यन्त	12 (15) अंक

भाग क के लिए सहायक पुस्तकें :

1 संस्कृत रचनानुवाद कामुदी, रजनीश झा प्रकाशन डीलीगंज,रेलवे कासिग,सीतापुर रोड लखनऊ ।
2 अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर हंस प्रकाशन, मोतीलाल बनारसीदास , दिल्ली ।
3 रूपकौमुदी, रूपचन्द्रिका, रूपसारिका ।

पाठ्य–विषय तथा अंक विभाजन

क– संस्कृत वाक्य रचना / अनुवाद :

1 निम्न शब्दों के सुबन्तरूपों का कण्ठस्थीकरण –
क– विपद्, संरित, मरूत,वाच्,दिश्, राजन्, आत्मन, युवन्,विद्वस्,जगत्, नामन्, ब्रह्मन्, मनस्,धनुष् तथा इनके समान अन्य शब्द ।
ख – विद्यार्थि, करन्, भगवत् , धनवत्, बुद्धिमत् , भवत् , तादृश्, तावत् , कियत् , पठत् तथा इनके समान अन्य शब्द । तीनों लिङ्गो में अभ्यास ।
ग – राम–नर , मुनि–हरि ,मति, सखि, कर्तृ, पितृ, भ्रातृगो , रमा , मति , नदी, धेनु, वधू, मातृ, फल , वारि, दधि , बहु तथा इनके समान अन्य शब्द ।

2 केवल लट्, लृट्,लङ्, लोट , लकारों में निम्न धातुओं के तिङ्न्त रूपों का कण्ठस्थीकरण ।
क– भ्वादिगण–भू , पठ्, वद् , गम् , पा, दृश्, जि, स्था, स्मृ, खाद्, हस्, रक्ष , मुद्, कम्प् ,भज् , लभ् , वृध ,भृ , धृ , नी , पांच , यज् , याच् , वस्, वृत , हृ ,
ख –तुदादिगण–तुद् , मिल् , लिख्, कृष ,प्रच्छ्, सिच् , मृ , स्पर्श ।
चुरादिगण– चुर्,चिन्त्, भक्ष , कथ् , पण् , ताड् ,।
दिवादिगण–दिव् , कुप् , कम् ,क्षम् , जन् , विद् , नश् ,नृत्, बुद्ध ,कुद्ध, युद्ध,विद्,मन्, विध्, शुप् ।
अदादिगण – अस्, अधि +इङ् , दुह् ,ब्रू या विद् , शी ,स्वृ , रूद् ।
जुहोत्यादिगण – हु ,दा, धा , भी ।
स्वादिगण – आप् , प्राप् , चि , वृञ् , शक् तथा भ्वादिगण– श्रु ।
रूधदिगण – छिद् , भुज ,युज् ।
तनादिगण – तन् , कृ ।
क्रयादिगण – की , ग्रह , ज्ञा , बन्ध , मथ् ।

3 तीन पद वाले लघु वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद ।

नोट : प्रत्येक लघु वाक्य में एक कर्तृशब्द तथा एक क्रियाशब्द उक्त निर्धारित शब्दोच्चारणों में पूछे जायेगे । प्रत्येक लघु–वाक्य में इन दो पदो के सही अनुवाद के लिए आधा अंक निर्धारित है । आधे अंक का तीसरा पद निम्न विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित होगा ।

क– उपपदविभक्तियों का ज्ञान	तीन वाक्य
ख– संख्या तथा कम वादक शब्दों का प्रयोग	तेरह वाक्य
ग– क्रिया विशेषण तथा अव्यय	तीन वाक्य

घ– णिजन्त क्रिया का प्रयोग — तीन वाक्य
ङ.– शतृशानचकृदन्तप्रयोग — तीन वाक्य
च– क्त्वा–ल्यप्कृदन्तप्रयोग — तीन वाक्य
छ– क्तेवतु–तुमुनाम्तप्रयोग — तीन वाक्य

4 कर्मवाच्य में छः लघुवाक्यों का प्रयोग :
इनके लिए केवल कृत्य तथा क्तप्रत्ययान्तों और लट् लकार की भाव –कर्मक्रिया का ज्ञान तथा प्रयोग अपेक्षित है ।

5 कर्म आदि अन्य कारकों तथा विशेषणों से सम्बन्धित विभिन्न लिंगोंके 6 पदों वाले पांच वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद
कर्तृवाचक पद को छोडकर शेष प्रत्येक पद के लिए

5 मिश्रित पदों वाले 5 वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद

6 क–चार में से तीन गद्य भागों का संप्रसंग हिन्दी में अनुवाद – 10 (15)
ख– पांच में से तीन श्लोकों का संप्रसंग हिन्दी में अनुवाद – 10 (15)

परीक्षक के लिए निर्देश :

1. परीक्षक के लिए निर्देश है कि वह प्राईवेट विद्यार्थियों के लिए अंकों का उल्लेख कोष्ठों में करे ।
2. छात्रों की सुविधा के लिए विकल्प दो गुणा दिए जाये ।

चतुर्थ पत्र : दर्शन

पूर्णांक
रेगुलर – 80
प्राईवेट – 100

पाठ्यक्रम :

1	तर्क संग्रह : दीपिका टीका सहित	40 (60)
2	ईशावास्योपनिषद्	15 (15)
3	श्रीमद्भगवद्गीता	25 (25)

परीक्षक के लिए निर्देश :–

1 परीक्षक के लिए निर्देश है कि वह प्राईवेट विद्यार्थियों के लिए अंकों का उल्लेख कोष्ठों में करे ।

2 सभी प्रश्नों में दो विकल्प दिए जायें ।

प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष

प्रथम पत्र : व्याकरण

पूर्णांक
रेगुलर – 80
प्राईवेट – 100

वरदराजकृत सिद्धान्त कौमुदी के निम्न प्रकरण

1	क	गण	35 (40) अंक
	ख	प्रक्रियाएँ	15 (20) अंक
	ग	कृदन्त	20 (30) अंक
2	लिंग अनुशासन		10 (10) अंक

अंक विभाजन :–

भाग 1 क 1 गण–10 में से 5रूपों की सिद्धियाँ 15 (20) अंक